مئی ۲۰۱۳ء

ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قَالَ اللّٰہُ تبَارَکَ وَتعَالیٰ قَدْ جاءَ کُمْ مِنَ اللّٰہِ نُورٌ وَکِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



نورہدایت فاؤنڈیشن، حسینیۂ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2011-13   Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

May 2013

حسینیہ تعمیر کردۂ منصف الدولہ شریف الملک مولانا سید محمد باقرؒ ابن سلطان العلماءؒ (مہدی گنج، لکھنؤ)





NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

बिस्मेही तआला

वर्ष 9 — अंक 10

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

अप्रैल 2013

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230 Mobile No: 09335276180 — 09335996808

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफसेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर ऑफिस नूरे हिदायत फ़ाउन्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जायसी'।

Per Copy 20/- Annual 200/-

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10



WEBSITE:
www.noorehidayatfoundation.com
www.al-ijtihaad.com
E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर

2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर

3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर

4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

विषय सूची

मई 2013ई०

जमादिउस्सानी 1434हि०

ज़िन्दगी का सिस्टम

y§kd %आयतुल्लाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी
lEiknu %नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

क़िस्त : 12

हब रह गयी कुछ मुस्तहब (वान्छित) चीज़ें जैसे पेशनमाज़ी, इस में ये ज़ाहिर है कि ये अस्ल नमाज़ पर मज़दूरी नहीं लेता, यानी अगर ये मज़दूरी न भी मिलती तब भी वह नमाज़ पढ़ता मगर मस्जिद में और जमाअत से नही पढ़ता । ये ख़ास बात उजरत की वजह से पैदा हुई है, इसलिये इन के सवाब का हक़ उसको नहीं है। इसी तरह ज़ाकिरी या डाक्टरी उस हद तक कि जो वाजिब के दरजे तक न पहुँची हो, उसमें सवाब का हक़ होना कठिन मालूम होता है।

मगर इस मसले में गहराई से सोचने पर मालमू होता है कि इसकी दो सूरतें हो सकती हैं। एक ये कि इस आदमी को यह काम करने पर उकसाने और काम कराने वाले में वह आदमी रूपये को छोड़ कुछ हो ही न और उसके दिल में अल्लाह के लिए करने का कोई ध्यान पाया ही न जाता हो। दूसरी सूरत है कि उसको लिल्लाहियत का भी ख़्याल हो । ये चीज़ आपको थोड़ी अजीब मालूम होंगी, लेकिन ज़रा थोड़ी देर के लिए मेरे साथ इस मसले पर ग़ौर कीजिए ।

कभी कभी इन्सान ये देखता है कि उसे रोज़ी–रोटी के लिए कोई न कोई ज़रिया तो अपनाना ज़रूरी है। इस सिलसिले में वह ग़ौर करता है और देखता है कि अगर वह डिपार्टमेन्ट जिसमें जुल्म आदि आ़म तौर पर चल रहा हो उसमें जाकर नौकरी करले तब भी उसकी रोज़ी–रोटी चल जाएगी। एक शराब ख़ाने में नौकरी कर ले तब भी रोज़ी–रोटी चल जाएगी या किसी दुकान का एजेन्ट हो जाए, उससे भी रोज़ी–रोटी चल जाएगी, और इन सबके मुक़ाबले में फ़र्ज़ कीजिए कि वह ज़ाकिरी को अख़्तियार करे या डाक्टरी को अपनाये तो ये भी रोज़ी–रोटी का ज़रिया हो सकता है । अब उसके दिल में ये ख़्याल पैदा होता है कि अगर वह पहली नौकरी करता है तो नाजायज़ बातों को करना पड़ सकता है। दूसरी सूरत (शराब ख़ाने में काम करने वाली) भी नाजाएज़ है। तीसरी सूरत में रोज़ी–रोटी तो हो जाएगी लेकिन इससे कोई मज़हबी फ़ायदा फिर भी नहीं मिलेगा। चौथी सूरत में वह देखता है कि ज़ाकिरी से मज़हबी फ़ायदा हासिल होगा और डाक्टरी से ख़ुदा की मख़लूक़ को फ़ायदा पहुॅचेगा, जो ख़ुदा चाहता है इसलिए वह अपने जीने के लिए इसको अपना लेता है । बहुत मुम्किन है कि उसे पहले वाले पेशों में ज़्यादा रूपए मिलते लेकिन वह उस बढ़ोत्तरी से मुॅह मोड़ लेता है और इस हालत में अपनी कम कमाई पर बस करता है।

ऐसे में वह जो कुछ करता है वह बेशक पेशे की तरह से है मगर इस पेशे को अपनाना, अल्लाह की चाह को सामने रखने की वजह से और मज़हबी फ़ायदे के लिए था। ऐसे में यक़ीनन वह जो भी काम करता है उस पर उसे सवाब का भी हक़ है। अब उसका काम बिल्कुल नीयत पर टिक गया और हमारी ज़बान बन्द हो गयी, यानि हमको किसी ऐसे आदमी के बारे में जो कमाई के लिए इस तरह के ज़रिए को अपनाता है उसके बारे में ये कहने का हक़ नहीं रहा कि उसका काम बातिल (ग़लत) है। ये ख़ुदा ही जानता है कि उसकी नीयत क्या थी और उसका अ़मल किन जज़्बों और एहसास से है।

lclsigyhbcknr ¼ikfDr½

सबसे पहली इबादत जो नीयत के साथ की जाएगी वह पाकी है। आम हालात में नमाज़ के लिए वुजू की जरूत है, वह 'नमाज़' के लेहाज़ से तो वाजिब है, और इसीलिए इसे ''वाजिबे ग़ैरी'' (यानि दूसरी चीज़ की वजह से 'वाजिब कहा गया है) वरना बज़ाते ख़ुद वुजू मुस्तहब है और उसकी बड़ी फ़ज़ीलत और गुण है।

oqtwdsQk;ns

यूँ तो शरीयत (धर्म विधि) के हुक्मों और ख़ासतौर से इबादतों के असली मक़सद को इन्सान

की अक़्ल समझ ही नहीं सकती और अगर असली मक़सद मालूम भी हो जाए तो फिर वह 'इबादत' रह ही न जाए क्योंकि तब तो इन्सान सिर्फ़ मक़सद के पाने को देखेगा, चाहे वह जिस तरह भी हो, और *''कुर्बतन इलल्लाह''* (अल्लाह के लिए) उस काम को करने की ज़रूरत ही महसूस न होगी। 'इबादत' का राज़ तो इसी में है कि हमें कुछ नहीं मालूम कि उसका असली मक़सद क्या है मगर क्योंकि हमारे मालिक का हुक्म है, बस इसलिए हम उसे करते हैं। लेकिन फिर भी एककामे इबादत के कुछ थोड़े-बहुत फ़ायदे इन्सान की समझ में आ सकते हैं और इन फ़ायदे और मक़सद पर सोच विचार करने में भी कोई हर्ज नहीं। लेकिन इन्हीं को अस्ल बुनियाद नहीं समझना चाहिए, क्योंकि मुम्किन है उसमें इनके फ़ायदे के अलावा भी दूसरे मक़सद नज़र में हों जिनको हम पूरे तौर पर नहीं समझ सकते।

अब ग़ौर कीजिए कि वुज़ू में होता क्या है ? चेहरे का धोना, दोनों हाथों का कुहनियों तक धोना, इसके बाद सर और पैरों का मसा, और अगर पूरे तरीक़े और मुस्तहब बातों के साथ वुज़ू किया जाए तो सबसे पहले तीन बार हाथों का गट्टों तक धोना, तीन बार कुल्ली करना और तीन बार नाक में पानी डालना। ज़ाहिर है कि शुरू में इस्लाम धर्म क़ानून का जिसके साथ सीधे सामना पड़ा वह अरबों के साथ पड़ा फिर उसके घेरे में बहुत सी वह जातियां मिलती हैं जो अरबों ही की तरह झगड़ालू और जंगली ज़िन्दगी बिताती हों।

अरबों के नज़रिए का अंदाज़ा जो उनकी पुरानी शाएरी से होता है वह ये है कि वह जंग व ग़ारत के सिलसिले में सफ़ाई सुथराई का बिल्कुल लेहाज़ नहीं करते थे बल्कि वह मैले रहने पर फ़ख्र करते थे। ग़ौर कीजिए शन्फ़री अज़दी के इस मशहूर क़सीदे (सराहना की कविता) *''लामियतुल अरब''* पर जिसमें उसने अपने ख़याल में ऊंचे शिष्टाचार (High Morals) की मिसाल दी है। इसमें वह ख़ुद अपनी तारीफ़ में कहता है -''

> मेरे सर के बड़े-बड़े बाल इस तरह हैं कि हवा के चलने से उनके गुच्छे चारों तरफ़ उड़ते हैं, और उनमें कभी कन्घी नहीं होती, तेल के पड़ने को और सफ़ाई को एक काल हो गया है और उसमें सूखा मैल जमा है जो एक साल का हो गया है।''

अब अगर इनके सामने इस मक़सद को पेश किया जाता कि देखो, साफ़ रहा करो और मैले न रहो, तो वह उसे कोई अहमियत न देते, क्योंकि उनकी प्रकृति में सफ़ाई और सुथरेपन का कोई मतलब ही नहीं था।

इसलिए उनके लिए इबादत के नाम पर ऐसे हुक्म लागू किए गये कि जिनसे सफ़ाई का मक़सद तो मिल ही जाए और अस्ल निगाह में ये हो कि ये ख़ुदा का हुक्म है और बिना इसके नमाज़ जैसी अहम इबादत जो इस्लाम का स्तंभ है, वह सही तरीक़े से नहीं हो सकती।

अब अगर कुछ ख़ास सूरतें पैदा हो जाएं तो नहाना इन्सान के लिए ज़रूरी हो गया और यूँ रोज़ाना हर नमाज़ के लिए उसे वुज़ू से रहना ज़रूरी हुआ, इससे कई बार उसके हाथ मुँह धुल जाएगें और ख़ासतौर से अगर पूरे तरीक़े और मुस्तहब बातों के साथ वुज़ू हो तो कुल्लियों के ज़रिए से मुँह के अन्दर के हिस्से की सफ़ाई होगी, जबकि उसके साथ मिस्वाक (दातुन) करने पर भी बहुत ज़ोर है और इसे इस दरजे तक अहमियत दी गयी है कि हज़रत रसूल (स0) ने फ़रमाया - ''अगर मुझे अपनी उम्मत पर बहुत ही कठिनाई का डर न होता तो मैं मिस्वाक को वाजिब (अनिवार्य) कर देता।''

ये मिस्वाक वुज़ू के वक़्त अलग से और फिर हर नमाज़ के मौक़े पर अलग से इसलिए तरह-तरह के बहाने रखे गये जिन से इन्सान के लिए सफ़ाई और पाकी का मक़सद मिल जाय।

वुज़ू का एक बहुत बड़ा फ़ायदा उस वक़्त सामने आता है, जब इन्सान पर नींद छायी हो और वह नमाज़ के लिए खड़ा होना चाहे उस मौक़े पर अगर यूँ ही वह नमाज़ पढ़ने लगता तो उस पर नींद बहुत ज़्यादा सवार होती लेकिन वुज़ू कर लेने से नींद हल्की हो जाती है और इन्सान का इबादत की तरफ़ ध्यान पैदा होता है।

हदीस में वुज़ू के इन सारे फायदों का बयान मौजूद है। ह0 इमाम रिज़ा (अ0) फ़रमाते हैं -

''वज़ू का हुक्म इसलिए हुआ है और इसको

शुरू में रखा गया है ताकि बन्दा उस वक़्त मैल से दूर पाक व पाकीजा हो जब वह अपने मालिक के सामने दुआ के लिए खड़ा हो रहा है और उस हुक्म में उसका आज्ञाकारी हो जो उसको दिया गया है और मैल कुचैल से पाक व साफ़ हो, इसके अलावा उसमें काहिली व नींद को दूर करना और दिल का पाकीज़ा करना भी है, मालिक के सामने खड़े होने के लिए।''

वुज़ू को इतनी अहमियत दी गयी है कि नमाज़ की वह सूरत जो किसी मसलहत की वजह से पढ़ी जाए और जिसमें सचमुच नमाज़ का अस्ल मक़सद पूरा नहीं होता, इस पर भी उसे बिना वुज़ू अदा करने के लिए मना किया गया है। ये बात आगे दी जा रही रवायत से आपकी समझ में आ जाएगी। ग़ौर कीजिए मुस'इद बिन स–द–क़ः की रवायत–एक आदमी ने इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ0) से पूछा कि अक्सर ऐसा होता है कि दूसरे गुट की तरफ़ से मैं उस वक़्त जाता हुँ जब उनकी नमाज़े जमाअत हो रही होती है और मैं वुज़ू किए हुए नहीं हूँ। अब अगर मैं उनके साथ नमाज़ न पढ़ूँ तो वह तरह–तरह की बातें करेंगे। तो क्या ऐसे में ये सही है कि मैं उनके साथ (बिना वुज़ू) नमाज़ पढ़ लूँ और फिर वहाँ से वापसी के बाद वुज़ू करके अपनी नमाज़ पढ़ूँ।

इमाम (अ0) ने फ़रमाया – " अल्लाहु अकबर! जो आदमी बग़ैर वुज़ू नमाज़ पढ़े उसको ये डर नहीं होता कि ज़मीन फट जाए और वह उसमें धंस जाए।

otq wd sfy, dqvkZu dk C;ku

कुर्आने मजीद सूरा माएदा में वुज़ू का हुक्म इन शब्दों में दिया गया है :– ''जब तुम नमाज़ के लिए खड़े होने लगो'' इन लफ़्जों से वुज़ू का *''वुजूबे ग़ैरी''* (दूसरे से वाजिब होना) होने का हुक्म साबित होता है, यानि वुज़ू अपने से वाजिब नहीं है बल्कि एक दूसरे वाजिब फ़र्ज़ यानि (अनिवार्य) नमाज़ की वजह से वाजिब है। इसीलिए इसके हुक्म की शुरूआत में नमाज़ के इरादे को बताया गया है कि जब नमाज़ का इरादा करो तो ''तुम धोओ अपने चेहरों को और अपने हाथों को कुहनियों की हद तक'', इन्हीं शब्दों की वजह से अहले सुन्नत हाथों को उल्टा धोते हैं यानि उंगलियों से कुहनियों की तरफ़ पानी ले जाते हैं, मगर इमामों (अ0) ने जो अल्लाह की शरीयतें ब्यान करने वाले हैं उन्होंने ये बता दिया है कि हाथों के धोने में कुहनियों की तरफ़ से शुरू करना चाहिए और यही हाथों के धोने का फ़ितरी (Natural) तरीक़ा भी है। रह गया कुर्आन मजीद में *''इलल 'मराफ़िक़ि''* इसकी दो सूरतें हो सकतीं हैं एक ये कि *''इला''* धोने की हद बताता हो, यानि धोना कुहनियों तक होना चाहिए, इस सूरत में बेशक शुरूआत उंगलियों से और ख़त्म कुहनियों पर होना साबित होगा। लेकिन दूसरी सूरत ये है कि *''एला''* जिस चीज़ को धोना है उसकी हद बताने के लिए है, यानि उतना हिस्सा, जो धोया जाएगा वह कुहनियों तक है। क्यों उस तरफ़ उंगलियां आख़िर में हैं और उनके आगे कुछ नहीं हैं इसलिए हद बताने की ज़रूरत नहीं, लेकिन इस तरफ़ कुहनियों के आगे भी हाथ का हिस्सा होता है इसलिए इधर की तरफ़ यानि कुहनियों की तरफ़ आख़िरी हद बयान करने की ज़रूरत महसूस हुई।

अब इतने हिस्से को किस तरह से धोया जाए सीधा या उल्टा, इसे कुर्आन में नहीं बयान किया लेकिन ये बात यक़ीनी है कि कुदरती Natural हैसियत से जो इन्सान की समझ में आएगा वह सीधा ही धोना है, उल्टा धोने के हुक्म के लिए अलग से व्याख्या की ज़रूरत है। बहरहाल हमारे मासूम इमामों के हुक्म के मुताबिक़ बताई गयी निश्चित की गई सूरत यही है कि कुहनियों से उंगलियों के सिरे तक धोया जाए और अगर इसका उल्टा किया जाएगा तो वुज़ू ग़लत होगा। फिर हुक्म हुआ है ''और मसह करो अपने सरों में'' अगर *''अमसहू रऊ–सकुम''* होता तो ये मानी पैदा होते कि सरों का मसह करो, इस सूरत में पूरे सर का मसह होना चाहिए था, लेकिन चूँकि यहाँ *'बि–र–ऊसिकुम'* है, इससे मालूम होता है कि सर के मसह के लिए कुछ ख़ास हिस्सा है पूरे सर का मसह नहीं है। मासूम इमामों (अ0) का कहना है कि मसह सर के एक ख़ास हिस्से पर है और वह ख़ास हिस्सा सर के आगे का हिस्सा है, इसी के अन्दर मसह होना चाहिए। 'ज़ुरारह' ने इमाम मु0 बाक़िर (अ0) से पूछा कि ये कहाँ से साबित होता है कि मसह सर के कुछ हिस्से पर होना चाहिए ? तो हज़रत (अ0) ने इरशाद फ़रमाया : *''बे–रऊसिकुम''* में जो 'ब' है उससे मालूम होता है कि मसह सर के कुछ हिस्से पर है।

इसके बाद कुर्आन में है *''व–अर्जु–लकुम''*

इसको क़ुर्आन में आम तौर पर 'ज़बर' ('अ' की मात्रा) के साथ इस तरह बयान किया गया है – " इस पर इस तरीक़े की बुनियाद टिकी है कि पैरों को वुज़ू में धोया जाए, इस तरह ये पहले शब्द *"फ़–अग़्सिलू"* यानि "धोने" से जुड़ जाता है।

अब इन लोगों के तरीक़े पर क़ुर्आन की आयत का अनुवाद यूँ होगा – "धो अपने चेहरों और हाथों को कुहनियों तक और मसह करो अपने सरों का और पैरों का, यानि पैरों को धोओ।"

इसके ख़िलाफ़ अहलेबैत (अ0) का तरीक़ा ये है कि ये *"रऊ–सकुम"* पर अत्फ़ है और *"अम्सहू"* के आधीन (Under) है जिससे ये नतीजा निकलता है कि पैरों का 'मसह' ज़रूरी है। इसका फ़ैसला तो यूँ हो जाता है कि *'अर्जुलिकुम'* पढ़ना खुद अहले सुन्नत के माने हुए सात क़ारियों (कुरान पाठक) में से कुछ की क़िर्अत (क़ुर्आन पाठन शास्त्र) है और चूँकि ये बात मानी हुई है कि इन सब क़ारियों की किर्अत लगातार है इस लिए इस क़िर्अत के मानने पर सुन्नी मजबूर हैं और शीया भी इस क़िर्अत को मानते हैं इसलिए ये दोनों फ़िरकों में मानी हुई और एका की हुई है लेकिन *"अरर्जुलकुम"* यानि लाम पर ज़बर के साथ शीया नज़रिए से सही नहीं है, फिर ये कि *'अर्जु–लकुम'* का अत्फ पास वाले जुम्ले (शब्द) को छोड़ कर पिछले जुम्ले के मफ़ऊल (कर्म कारक) Object से जोड़ना अगर बिल्कुल ग़लत न भी हो तब भी क़ुर्आन की फ़साहत (साफ़ और सीधे बोल) के ख़ेलाफ़ ज़रूर है और आप ने ऊपर देखा कि इसका अनुवाद भी अजीब होता है। (इसलिए अल्लामा फ़ख़्रूद्दीन राज़ी ने तो कहा है कि अगर ये *"अरजु–लकुम"* ज़ेर (इ की मात्रा) के साथ हो तब भी उसको रऊसिकुम से ही जोड़ना चाहिए इस लेहाज़ से कि यह सही है कि 'बेरऊसेकुम' में हर्फ़े जर यानि (Preposition) 'बि' की वजह से ज़ाहिर, में ज़ेर है मगर असल में वह 'अम्सहू' का मफ़ऊल (Object/कर्म कारक) है। इसलिए इसकी जगह ज़ेर की है और ऐसे में ज़ेर के साथ इस पर अत्फ़ सही है। इसलिए पैरों का मसह ही ज़रूरी होगा, धोना सही नहीं है।

oq ¶wl st qMh nq k; i

इस्लाम धर्मशास्त्र का मक़सद इबादतों में जो इस्लाम धर्म शास्त्र का असल चाहना है और जिस तरह की कैफ़ियत पैदा करना है और जो अस्ली मक़सद है उसकी तरफ़ अक्सर उन दुआओं के ज़रिए लाने की कोशिश की गयी है, जो उस इबादत के वक़्त पढ़ने के लिए (मासूमों की) बतायी हुई हैं, क्योंकि दुआ सिर्फ़ शब्दों का पढ़ना नहीं है जो इमाम (अ0) के ज़रिए हम तक पहुँचे हैं।

देखिए 'तिलावत' (पाठ), ज़िक्र (याद), दुआ (प्रार्थना/याचना) ये तीनों चीज़ें अलग–अलग हैं। तिलावत के मानी हैं, दूसरे के बोल को ऐसे पढ़ना, कि वह दूसरे का कहा हुआ है और ज़िक्र के मानी खुद अपनी तरफ़ से खुदा के गुण का बयान करना और उसकी तारीफ़ करना, सराहना।

जैसे – *"अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल–आलमीन"* इसको जब हम इस तरह से पढ़ें कि ये सूरा 'हम्द' का हिस्सा है तो इसका पढ़ना 'तिलावत' होगा और अगर हम कहें *"सुब्हानल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि व ला–इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर"* अब यहाँ *"सुब्हा–नल्लाह"* क़ुर्आन में है, *"अल्हम्दुलिल्लाह"* भी क़ुर्आन में है और *"ला–इला–ह इल्लल्लाह"* भी है और मान लीजिए कि *"अल्लाहु अक्बर"* भी हो, लेकिन फिर भी यहाँ इनका पढ़ना क़ुर्आन की आयत की हैसियत से नहीं है, इसलिए वह 'ज़िक्र' में आएगा, इसे 'तिलावत' नहीं कहा जाएगा।

अब दुआ इन दोनों के मुक़ाबले में है, यानि दुआ के मानी हैं खुदा के आगे अपनी मांगों, ज़रूरतों को रखना, ये "दुआ" तभी होगी जब उसमें इस तरह की चाह साथ हो।

"इहदिनस्सिरातल् मुस–तक़ीम" सूर–ए–'हम्द' में पढ़ा जाए तो वह दुआ नहीं होगा, बल्कि तिलावत का हिस्सा है, लेकिन इसको जब हम 'क़ुनूत' (नमाज़ की दूसरी रकत में हाथ उठाकर दुआ करना) में कहे और अपनी तरफ़ से कहें – *"इहदिनस्सिरातल् मुस्तक़ीम"* तो अब वह दुआ होगी। जिसके मानी हैं कि "(ऐ खुदा) हमको सीधे रास्ते को दिखा (सीध ो रास्ते पर रख)।"

इसी तरह वह दुआएँ जो किसी इमाम से आयी है, अगर उसी लेहाज़ से उनको पढ़ा जाए कि वह उन्हीं इमाम का बोल या कहना है और उसे हम सिर्फ़ पढ़ रहे हैं तो वह हमारी ज़बान से दुआ हरगिज़ नहीं होंगी। जैसे सहीफ़–ए–कामिला (चौथे इमाम की दुआओं की किताब) की किसी दुआ को आदमी याद

करने की को बार–बार दोहरा रहा हो तो उस वक़्त जो ये पढ़ रहा है उसे उस आदमी की तरफ़ से दुआ नहीं कहा जा सकता, हाँ, उस प्रार्थना को याद करने के बाद जब 'अपनी' दुआ के इरादे से ख़ुद उसको ज़बान पर लाए, तो वह दुआ (खुदा से मांगना होगा) होगी।

दूसरी सूरत ये है कि मान लीजिए सही–फ़–ए–सज्जादिया कोर्स में हो, मास्टर कोर्स की किताब की तरह छात्रों के सामने उन दुआओं को पढ़ता है, उसका अनुवाद करता है, मतलब बताता है, ये पढ़ना उसका हरगिज़ दुआ नहीं है।

इसी तरह मान लीजिए सहीफ़–ए–सज्जादिया की छपाई का काम चल रहा हो, कापी प्रूफ़ के लिए एक आदमी पढ़ता है दूसरा देखता है, क्या ये उस आदमी की तरफ़ से दुआ है? हरगिज़ नहीं, दुआ के मानी ये हैं कि ये आदमी उस दुआ के विषयों (उसकी बात) को अपनी तरफ़ से मांगने की तरह कहे और उसके मक़सद के पूरा होने की 'ख़्वाहिश' करे, उस का नाम 'दुआ' है।

ये दुआएँ जो अलग–अलग वक़्त और अलग–अलग हालतों में आयी हैं, इनको सिर्फ़ ये समझना कि इनके बोल में असर हैं यानि जैसे दवाओं में ख़ासियत होती है या जिस तरह मंत्रों के बोल में असर होता है उसी तरह इन दुआओं में भी है, ये हरगिज सही नहीं है। इन दुआओं का मक़सद ये होता है कि उस काम को करते वक़्त एक आदमी के दिमाग़ में उन विचारों को पैदा होना चाहिए ओर उसके दिल में जज़्बात व भावनाओं की बुहतात होना चाहिए, इसीलिए उन दुआओं के मानी–मतलब अक्सर उन कामों या उस वक़्त से मेल रखते हैं जिस लेहाज़ से वह दुआएँ आयी हैं। अगर सिर्फ़ बोल ही की बात होती तो इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी यानि कोई काम हाथ से लगाव रखता और उस वक़्त दुआ पैरों के लिए होती; काम होता पैरों का और दुआ ज़बान के लिए होती, या फिर रात से लगाव रखने वाली दुआ सुबह के वक़्त होती या रात को ऐसी दुआ जो दोपहर दिन की बात है। ऐसा हरगिज़ नहीं है बल्कि जहाँ तक हम देखते हैं, हर दुआ में उस चीज़ की तत्संगति (मेल) है जिसके लिए वह दुआ बताई गई है।

इसके माने ये हैं कि अस्ल मक़सद बोल नहीं हैं बल्कि मानो (अर्थ) का ध्यान है और वह मानी ऐसे हैं जिनका मक़सद उन हालतों और वक़्त जिस वक़्त या जिस बात की दुआ की जा रही है उसका ध्यान पैदा करना है।

बेशक वे लोग जो माने–मतलब नहीं समझ सकते (अरबी भाषा जिसमें ये दुआएं है, नहीं जानते) बरकत और शगुन के लिए मैं उन बोल को ज़बान पर ये समझते हुए लाऍ कि ये हमारे इमाम की शिक्षा है और इस में हमारी तरफ़ से ख़ुदा के आगे कुछ विनतीहैं, इतना ही ध्यान है तो इसे बिल्कुल बेकार नहीं कहा जा सकता। मगर दुआओं का असली मक़सद तो तभी पूरा होगा जब उनके 'माने' की तरफ़ पूरी तरह ध्यान हो और इन्सान पर इसका असर हो जिससे वह अपने दिल की तड़प और सच्चे जज़्बे के साथ उन दुआओं को ज़बान पर लाये।

वुज़ू के मौक़े पर जब इन्सान के सामने पानी आता है और वह उसको चुल्लू में लेता है तब दो चीज़े इन्सान के दिमाग़ में आती हैं, एक ये कि वह इस वक़्त धर्म के एक फ़र्ज़ कर्त्तव्य को अदा कर रहा है और एक काम पूरा करना चाहता है। अब उसे ध्यान होता है कि जो काम मैं कर रहा हूँ उसके सारे साधन, ज़रिए, हाथ–पैर, जिस्म और उनकी ताक़त, दिल–दिमाग़ और उनके एहसास करने समझने की बात, अक़्ल जिससे इरादे का ताल्लुक़ है, ये सब सीधे ख़ुदा के पैदा किए हुए हैं और अगर वह इन ताक़तों को छीन ले तो हम कोई भी काम नहीं कर सकते। इन्सान देखता है कि सिर्फ़ मैं और मेरी सकत (खुदा) के कहने पर चलने और काम करने के लिए काफ़ी नहीं हूँ, जब तक कि ख़ुदा मेरी उस तरह मदद न करे जिसे "तौफ़ीक" कहते हैं। उसकी मदद से इन्सान इबादत भक्ति करता है, और इसीलिए इन्सान इबादत में जितना भी जोश और लगन से काम ले वह ख़ुदा की बारगाह में उस इबादत को बड़ी हैसियत से पेश नहीं कर सकता और ना ही ख़ुदा का शुक्र (धन्यवाद) ही कर सकता है, क्योंकि वह सारे ज़रिए और चीज़ें जिनसे वह उस इबादत को पूरा करता है और वह सारे काम जिन्हें वह शुक्रिये के लिए करता है वे भी ख़ुदा के एहसान और कृपा के ही आभारी हैं और इसीलिए ख़ुद उन कामों के लिए भी अगर शुक्रिया किया जा सकता है तो वह ख़ुदा ही का।

(जारी.........................)

इस्लाम धर्म शास्त्र-इमामत का वर्णन

y§kd %जनाब सैय्यद लियाक़त हुसैन हिन्दी बनारसी
vuqokn %जनाब सैय्यद जाफ़र असर नक़वी साहब जायसी

क़िस्त : 2

beker ¼bZojh; us=Ro½dk o.kZu

इमाम वह व्यक्ति है जो पैग़म्बर के पश्चात उसका उत्तराधिकारी होता है, जो अपने अनुयायियों का लोक तथा प्रलोक में नेता हो और समस्त आवश्यक कार्यों में सफ़लता पूर्वक ठीक–ठीक नेत्रत्व कर सके। वह पैग़म्बर अथवा नबी (सन्देश धारी) तो न हो परन्तु उसमें एक नबी अथवा पैग़म्बर के गुण अवश्य विद्यमान हों। वह मनुष्यों के गुणों से अधिक तथा उत्तम योग्यता रखता हो:

beke dh vko';drk dk dkj.k

(1) जिस प्रकार संसार को शिक्षा, कल्याण तथा उपदेश के हेतु नबी अथवा पैग़म्बर का होना आवश्यक है उसी प्रकार पैग़म्बर के पश्चात ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जिस के द्वारा संसार की शिक्षा दीक्षा तथा कल्याण के कार्य भली भांति होते रहें।

(2) चूंकि अब ईश्वर की ओर से कोई अन्य नबी अथवा पैग़म्बर नहीं आएगा और यही इस्लाम धर्म शास्त्र प्रलय तक शेष रहेगा अतः उसके भली भांति प्रसार के लिए एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो नबी अथवा पैग़म्बर की भांति कार्य करता रहे जिससे अनुयायियों का कल्याण होता रहे।

beke d sxqk rFkk fpUg ¼y{k.k vkfn igpku½

(1) इमाम का लघु तथा दीर्घ पापों से पवित्र होना। (2) उन समस्त बातों का ज्ञान होना जिसको आवश्यकता उनको होती है अर्थात् लोक एवम् परलोक की विद्याओं में दक्षिता रखता हो। धर्म के सिद्धान्तों से शिष्टाचारी तथा सदाचारी हो। (3) वीर तथा बलवान हो। (4) कुल सदगुणों अर्थात् वीरता, दया, धर्म, दान, कृपा, विद्वान तथा गम्भीर इत्यादि विशेषताओं का वाहक हो। (5) उन दुर्गुणों से वंचित हो जिससे लोगों को घृणा है। जैसे अन्धा, कोढ़ी, लंगड़ा, लूला, लोभी कंजूस न हो तथा घृणित रोगों से पवित्र हो, कुल का दीन तथा सन्देहमय न हो अपने तथा पूर्वजों के कुल में कोई कलंक न हो और लघु उद्यमी हो इत्यादि। (6) उनसे ऐसे चमत्कारों का प्रकटन हो जिसके प्रकट करने में अन्य लोग असमर्थ हों। (7) पशु तथा पक्षियों की बात को समझता हो। (8) समस्त नबियों पर उतारे गए धर्म ग्रन्थ उसके पास हों। (9) नाड़ कटा हुआ और मुसलमानी किया हुआ जन्म ले। (10) उसको स्वप्न दोष न होता हो। (11) उसके नेत्र सोते हैं परन्तु उसका हृदय नहीं सोता। (12) अंगड़ाई एंव जमाई नहीं लेता। (13) पीठ पीछे भी सामने की भांति देखता है। (14) हज़रत मुहम्मद स. साहब की ज़िरह (कवच) जब पहनता है तो उसके शरीर पर ठीक आती है। (15) मुहम्मद साहब स. के अस्त्र शस्त्र उसके उसके पास होते हैं विशेष कर 'ज़ुल्फ़िक़ार' (तलवार) जो आकाश से उतरी थी। (16) भूत, भविष्य तथा वर्तमान काल की समस्त विद्याएं उसके पास होती हैं। (17) समस्त पैग़म्बरों की विद्याओं का उत्तराधिकारी होता है। (18) समस्त भाषाओं का पूरा पूरा ज्ञानी होता है। (19) जिस बात को पूछा जाए उसका सन्तोषजनक उत्तर दे सकता हो। फ़रिश्ते (आकाश दूत) शबे क़द्र (यह रात्रि रमज़ान के महीने में पड़ती है) में उसके पास आकाश से उतरते हैं।

bekekad suke

(1) हज़रत इमाम अली अलैहिस्सलाम (2) हज़रत इमाम हसन अ0 (3) हज़रत इमाम हुसैन अ0 (4) हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन अ0 (5) हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर अ0 (6) हज़रत इमाम जाफर ए सादिक अ0 (7) हज़रत इमाम मूसा काज़िम अ0 (8) हज़रत इमाम अली रिज़ा अ0 (9) हज़रत इमाम मुहम्मद तक़ी अ0 (10) हज़रत इमाम अली नक़ी अ0 (11) हज़रत इमाम हसन असकरी अ0 (12) हज़रत इमाम महदी

साहब उल–अस्र वज्ज़मान अ0। आप वर्तमान काल के इमाम है। आपका जन्म 15 शाबान 256 हि0 में हुआ था। आपकी इमामत आपके पिता के शहीद होने के पश्चात सन् 260 हि0 तद्नुसार 874 ई0 से आरम्भ हुई और अब तक है और भविष्य में भी रहेगी। वर्तमान समय में आप अदृश्य हैं। जब ईश्वर का आदेश होगा और आप प्रकट होंगे तो आकाश से हज़रत ईसा (येशू) उतरेंगे और आपके पीछे नमाज़ पढ़ेंगे। आप प्रकट होकर समस्त संसार को न्याय से परिपूर्ण कर देंगे। सब लोग सुख चैन से रहेंगे किसी प्रकार का दुःख एंव क्लेश नहीं होगा। उस समय समस्त विश्व इस्लाम धर्म का अनुयायी होगा।

bekeksa d h l a{kIr t hofu; ka

¼1½ gt jr bek e v y h v 0%& आपका जन्म 13 रजब सन् 599 में पवित्र काबा गृह के भीतर हुआ था। आप के पिता का नाम हज़रत अबूतालिब था। आप पैग़म्बर मुहम्मद साहब के चाचा के सुपुत्र थे और मुहम्मद साहब के दामाद भी थे। आप ने 10 वर्ष की आयु में ही सर्व प्रथम इस्लाम धर्म स्वीकार किया। आपने कभी मूर्ति पूजा नहीं की। आप सदैव मुहम्मद साहब के साथ रहे। मुहम्मद साहब की ओर से आपने शत्रुओं से सुरक्षा हेतु अनेकों युद्ध (जिहाद) किए और अनेकों प्रसिद्ध तथा वैभवशाली योद्धाओं को नर्क के घाट उतार दिया। आप को अब्दुल रहमान बिन (आत्मज) मुलजिम ने 21 रमज़ान सन् 40 हि0 तदानुसार 660 ई0 में कूफे की मस्जिद में प्रातः कालीन नमाज़ के समय आपको उस समय विषमय तलवार से शहीद किया जब आप ईश्वर को सजदा किए हुए थे। आप विश्व व्याख्यात वीरता के वाहक थे इसी कारण आप पर ईश्वर की ओर से 'जुलफिक़ार' नामक तलवार उतरी थी।

beker d h ?kks"k.kk%& मुहम्मद साहब जब अन्तिम हज के पश्चात सन् 10 हि0 को मक्का से लौटे तो 'ग़दीर–ए–खुम' के स्थान पर समस्त हाजियों को रोक कर एकत्र किया और भाषण दिया और ईश्वर के आदेशानुसार हज़रत अली को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। सभी लोगों ने स्वीकार किया और हज़रत अली अ0 को बधाई दी।

eksft t k ¼peRdkj½%& आपके मोजिज़े अत्याधिक हैं। यहां पर केवल एक मोजिज़े का वर्णन किया जा रहा है। एक बार कुछ मुनाफिकों (कपटियों) ने आपको कष्ट देने तथा उपहांस की इच्छा से परस्पर यह निर्णय किया कि एक जीवित व्यक्ति को ताबूत (अर्थी) में रखकर ले चलें और उनसे कहें कि आप इस पर नमाज़–ए–जनाज़ा पढ़ा दें और जब आप नमाज़ पढ़ा चुकें तो हम सब व्यंगात्मक स्वर में उनसे कहें कि आप तो सभी गुप्त बातों को जानते हैं फिर जीवित व्यक्ति की नमाज़–ए–जनाज़ा कैसे पढ़ायी? जब ताबूत रखकर आपसे नमाज़ पढ़ाने को अनुरोध किया गया तो आपने उस व्यक्ति के संरक्षक से आज्ञा लेकर नमाज़ पढ़ा दी। नमाज़ के पश्चात सब कपटी कहने लगे कि आपने जीवित व्यक्ति की नमाज़–ए–जनाज़ा कैसे पढ़ा दी? आपने कहा खोल कर देखो। जब खोल कर देखा गया तो वास्तव में वह जीवित व्यक्ति मर चुका था। अतः इस पर सभी कपटी लज्जित हुए।

gt jr v y h v 0 d sfopkj v kS t hou

¼1½ bZk jkT; us k%& ईश्वर ने इमामों पर यह अनिवार्य किया है कि वे अपना जीवन स्तर दीन, हीनों की दशा के अनुकूल रखें ताकि दोनों को उनकी दीनता नष्ट न कर दे।

¼2½ Hkqvkksa d s gkFk s gq i sV Hkj Hkkst u mfpr ugha%& यदि मैं चाहूं तो मैं भी निर्मल और स्वच्छ मधु और गेहूं की रोटी तथा रेशमी वस्त्र पहन सकता हूं परन्तु शोक का स्थान होगा कि मैं इच्छाओं का वशीभूत हो जाऊं, लोग मुझे स्वादिष्ट भेजन की ओर आकर्षित करें ऐसी दशा में जब कि हिजाज़ एंव यमामा देशों में ऐसे व्यक्ति हों जिनको एक रोटी का भी सहारा न हो वे जानते ही नहीं कि पेट भरना किसे कहते हैं। क्या मैं अपना पेट भर कर चैन से सोऊं जब कि भूखे मेरे पास उपस्थिति हों।

¼3½ u ?kj cuok; k u fd l h d ks t k; nkn nh%& हज़रत अली अ0 (35 हि0 से 40 हि0) अनुमानतः (लगभग) 5 वर्ष तक रही परन्तु उस समय आपने ईट पर ईट नहीं रखी अर्थात् घर का निर्माण नहीं किया और न किसी व्यक्ति को कोई जागीर दी।

¼4½ l jy t hou%& आप दर्ज़ी से अपने जुब्बे (वस्त्र) में पेवन्द लगवाते थे और 70 पेवन्द उसमें हो चुके थे तब स्वयं कहा कि मुझे दर्ज़ी से कहते हुए लज्जा आती है कि वह अभी और पेवन्द लगाए (1) आप मज़दूरों की भांति भूमि पर बैठते थे। वहीं भोजन करते

थे और भूमि पर सो रहते थे। स्वयं अपने हाथ से लकड़ियां लाते, पानी भरते, घर में झाड़ू देते और बाग़ों में जाकर मज़दूरी करते थे।

¼5½/ku dscVokjseal ekurk %& जिनपर शासक बनाया गया हूं उनका अधिकार छीन कर तुमको अधिक दूं और फिर देकर तुम्हें अपना सहयोगी बनाऊं। ईश्वर की सौगन्ध मैं इस नियम के निकट नहीं जाऊंग यदि यह धन मेरा अपना होता तो भी लोगों में बराबर विभाजित (वितरित) करता। फिर जब कि यह धन ईश्वर का है तो फिर कैसे समानता का व्यवहार न करूं। बिना अधिकार किसी को धन देना लोक में उच्चता सही परन्तु परलोक में नीचता ही घोषित होगी। आपने अपने भाई अक़ील का हाथ इस कारण गर्म लोहे से दाग़ दिया था कि उन्होंने अधिकार से अधिक लेने की चेष्टा की थी। अपनी पुत्री को जिन्होंने बैत–उल–माल (कोष) से गर्दन बन्द मगनी लेकर पहिन लिया था डराया धमकाया कि ऐसा करना उचित नहीं है।

¼2½gtjr beke glu v0%& आपका जन्म 15 रमज़ान सन् 3 हिजरी तदानुसार सन् 624 ई0 को मदीना में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत अली अ0 तथा माता का नाम हज़रत फ़ातिमा अ0 (स्वर्ग बाला) था। आप मुहम्मद साहब के बड़े नाती थे। अपने पिता के शहीद हो जाने के पश्चात् आप सन् 40 हिजरी में इमाम हुए। आपको जादा आत्मजा अशअस ने माविया की इच्छानुसार तथा उसके संकेत पर विष देकर सन् 49 हिजरी में शहीद कर दिया। आप बड़े गम्भीर तथा सहनशील थे।

ekSt tk ¼peRdkj½%& आपने किसी प्रश्न के उत्तर में किसी व्यक्ति से कहा कि यदि मैं ईश्वर से प्रार्थना करूं तो ईरान देश को सीरिया कर दे, स्त्री को पुरूष को स्त्री कर दे। वहां एक सीरिया का निवासी बैठा था उसने यह सुनकर व्यंग किया कि कौन ऐसा है कि सम्भव को असम्भव बना दे। यह सुनकर हज़रत ने उस से कहा कि उठ खड़ी हो ऐ नारी। तुझे लज्जा नहीं आती कि तू पुरूषों के बीच में बैठी हुई है। अब उसने आश्चर्य से अपने शरीर पर दृष्टिपात की तो वस्तुतः वह स्त्री हो चुका था। वह अत्यन्त व्यकुल हुआ। आप ने उससे कहा कि घबरा मत तेरी स्त्री भी पुरूष हो गया है और तुझे उस से गर्भ भी रहेगा और तू एक नपुंसक बच्चे को भी जन्म देगा। अन्त में ऐसा ही हुआ। तदोपरान्त उन दोनों ने आप से क्षमा मांगी। हज़रत ने प्रार्थना की और वे दोनों पुनः अपनी पूर्व दशा में परिवर्तित हो गए। आपके और भी अनेकों मोजिज़े हैं।

¼4½gtjr beke gqlSu v0%& आपका जन्म 3 शाबान सन् 4 हिजरी तदानुसार 625 ई0 में मदीना में हुआ था। आप हज़रत अली अ0 के छोटे पुत्र तथा मुहम्मद साहब के छोटे नाती थे। आप तथा आपके बड़े भाई हज़रत इमाम हसन अ0 के सम्बन्ध में मुहम्मद साहब ने यह बारम्बार कहा था कि ये दोनों स्वर्ग के नेता हैं। दोनों भाइयों तथा इन के माता पिता ने तीन दिन तक निरन्तर व्रत पर व्रत रखा और अपने सामने का भोजन दीन दुखियों तथा बन्दी को दे दिया जिसके उपलक्ष में कुरान में सूरा 'हल अता' आया है, जिसमें ईश्वर ने आप लोगों की कार्यवाहियों की प्रशंसा की है। आप को दस मुहर्रम सन् 61 हिजरी में कर्बला के मैदान में बाल–बच्चों तथा सहयोगियों सहित तीन दिन की क्षुदा एंव त्रिष्णा में बरबंता से शहीद कर डाला गया। (सन् 680 ई0)

ekSt tk ¼peRdkj½%& 'फितरूस' नामक फरिश्ता जिसके पंख किसी कारण से झड़ गए थे आप के जन्म के समय अन्य फरिश्तों के साथ आया और अपने शरीर को आप के पवित्र शरीर से स्पर्श किया जिससे उसके पंख जम गए और वह भी उड़कर अपने स्थान पर चला गया।

beker %& आपकी इमामत सन् 49 हिजरी अर्थात् अपने बड़े भाई हज़रत इमाम हसन अ0 की शहादत के पश्चात से आरम्भ होती है और सन् 61 हिजरी में समाप्त होती है। भाइयों में केवल आप ही को इमामत मिली वरन् पिता के पश्चात केवल (एक) पुत्र उसका उत्तराधिकारी होता रहा।

fo'ks"krk,¡%& कर्बला के रणक्षेत्र में भूखे, प्यासे शहीद होने के कारण आप को तीन विशेषताएं (वरदान) प्राप्त हुईः–

(1) आपकी कब्र की मिट्टी में यह प्रभाव है कि वह रोगियों तथा दुखियों के लिए कल्याण तथा लाभदायक है इस मिट्टी को ख़ाके शिफा कहते हैं।

(2) यदि आपकी क़ब्र के पास प्रार्थना की जाए तो ईश्वर अवश्य स्वीकार करता है।

(3) आगामी इमामत की कड़ी आप ही के वंश में रही।

¼4½gt jr beke t Sy vkfcnhu v0½& आप का जन्म 15 जमादी–उल–अव्वल सन् 36 हिजरी तदानुसार सन् 658 ई0 में मदीने में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत इमाम हुसैन अ0 था। आप कर्बला के महान बलिदान स्थान में उपस्थित थे परन्तु रोग ग्रस्त होने के कारण जीवित बच गए। कर्बला कांड के पश्चात आप माता एंव बहिनों के साथ बन्दी बना कर कुफ़ा, सीरिया तथा दमिश्क़ लाए गए थे। अनुमानतः एक वर्ष तक कारावास में रहे फिर वहां से मुक्ति मिलने पर कर्बला होते हुए मदीने लौटे। वहां 34 वर्ष तक पिता के शोक में आतुर रहे। अन्त में सन् 94 हिजरी तदानुसार सन् 712 ई0 में अब्दुल मलिक नामक शासक द्वारा विष दिये जाने पर आप का अमरत्व (शहादत) हुआ। अत्यधिक ईश्वरोपासना करने के कारण आपकी पदवी, ज़ैनुल–आब्दीन (भक्तों/उपासकों की शोभा) हो गई थी आप सदैव ईश्वरोपासना तथा प्रार्थना में लीन रहते थे।

ekStt k ¼peRdkj½& एक बार आप हज करने मक्का जा रहे थे। मार्ग मे डाकू मिले और उन्होंने कहा कि हम आपका वध कर डालेंगे और समस्त सामग्री भी छीन लेंगे। आपने स्वयम् उनको आधी सामग्री देने को कहा जिसे अस्वीकार कर दिया गया फिर आपने कहा कि अच्छा मक्का पंहुचने तक सामग्री रहने दो। डाकू जब इस पर भी सन्तुष्ट न हुए तो आपने एक से पूछा तुम्हारा ईश्वर इस समय कहां है। उसने उत्तर दिया कि वह इस समय निद्रा में सो रहा है। यह सुन कर सामने से दो सिंह प्रकट हुए एक ने उसका सिर लिया दूसरे ने उसके पैर। आपने कहा ईश्वर सोया नहीं करता।

¼5½gt jr beke egEen ckfdj v0½& आपका जन्म 1 रजब सन् 57 हिजरी तदानुसार सन् 676 ई0 को मदीना में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत ज़ैनुल–आबिदीन अ0 था। आप कर्बला के बलिदान स्थान में अपनी माता की गोद में थे। काण्ड के पश्चात आप भी बन्दी बन कर माता के साथ सीरिया गए थे। बनी उमय्या जो उस समय का शासक था उसकी निर्बलता के कारण आपने धर्म सिद्धान्त, शिक्षा एंव विद्या के विकास में कार्य किया। आपकी इमामत सन् 94 हिजरी से आरम्भ होती है। आपको हश्शाम आत्मज मलिक नामक शासक ने सन् 114 हिजरी तदानुसार 731 ई0 में विष देकर शहीद किया।

ekStt k ¼peRdkj½& आपके पिता के समय में जब बनी उमय्या हज़रत के शियों (अनुयायियों) को अधिक कष्ट देने लगे तो उन लोगों ने आपके पिता से दुहाई दी। आपने अपने पुत्र इमाम मुहम्मद बाक़िर अ0 से कहा कि हे पुत्र जो डोरा जिबराईल (ईश्वर दूत) लाए थे उसको हिलाओ। आप वह डोरा लेकर मस्जिद–ए–रसूल में आए। दो रकत नमाज़ पढ़ कर मस्तक पृथ्वी पर रख कर प्रार्थना की। फिर सिर उठाकर कुर्ते की आस्तीन से वह डोरा निकाला फिर 'जाबिर' अ0 को देकर कहा फैल जाओ। फिर आपने उस डोरे को हिलाया जिसके कारण मदीने में एक भीषण भूकम्प आया और बहुत से घर ध्वस्त हो गये। फिर डोरे को लपेट कर जब ईश्वर से प्रार्थना की तब वह भूकम्प समाप्त हुआ।

¼6½gt jr beke tkQj&,&lkfnd v0½& आपका जन्म 17 रबी–उल–अव्वल सन् 83 हिजरी तदानुसार 602 ई0 को मदीना में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत इमाम मुहम्मद बाक़िर अ0 था। आपकी इमामत अपने पिता की मृत्यु के पश्चात 114 हिजरी से आरम्भ हुई थी आपके समय में विभिन्न प्रकार की विद्याओं, धर्म शास्त्रीय सिद्धान्तों एंव उपदेशों का प्रचार हुआ। आपको 'मंसूर दवानीक़ी अब्बासी' नामक शासक ने विष देकर 148 हिजरी तदानुसार 765 ई0 में शहीद किया।

ekStt k ¼peRdkj½& एक बार आप अपने किसी बनावटी मित्र से वार्तालाप कर रहे थे कि उसी समय आपके एक माननीय मित्र वहां पधारे आपने उनसे कहा कि आप इस तनूर (अग्नि कुण्ड) में चले जाइए। उस पर वे सज्जन तुरन्त अग्नि में कूद पड़े और वहां जाकर बैठे रहे। थोड़े समय के पश्चात जब आप ने कपटी मित्र के साथ उस अग्नि कुण्ड के समीप आकर देखा तो चुप चाप बैठे हुए थे। आपने उनको फिर बाहर निकाल लिया।

¼7½gt jr beke elwk dkfte v0½& आपका जन्म 7 सफ़र सन् 128 हिजरी तदानुसार 746 ई0 को मदीना में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत जाफ़र–ए–सादिक़ अ0 था। आपकी इमामत आपके पिता के पश्चात 148 हिजरी से आरम्भ हुई थी आप

के जीवन के अन्तिम 15 वर्ष हारून रशीद अब्बासी नामक शासक के कारागार में व्यतीत हुए यहां तक कि मृत्यु के पश्चात लोहे की बेड़ियों तथा कारागार से मुक्ति मिली। आप प्रत्येक समय ईश्वरोपासना किया करते थे। आप अपने समय के महान विद्वान थे। आपको हारून रशीद अब्बासी शासक ने 25 रजब सन् 183 हिजरी तदानुसार 799 ई0 में विष देकर शहीद किया।

ekSt tk ¼peRdkj½& एक बार हम्माद आत्मज ईसा ने आपकी सेवा में उपस्थित होकर कहा कि आप मेरे लिए ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह मुझे एक घर, एक स्त्री, एक पुत्र तथा एक नौकर प्रदान करें और मुझे प्रत्येक वर्ष हज करने का अवसर भी प्राप्त हो। आपने प्रार्थना की कि हे परमात्मा इस व्यक्ति को एक घर, एक स्त्री, एक पुत्र तथा 50 वर्ष तक हज करने का अवसर प्रदान किया जाए। हम्माद का कथन है कि हज़रत की प्रार्थना से मुझे ये समस्त वस्तुएं प्राप्त हुईं और 50 वर्ष तक मैंने हज भी किया उसके पश्चात जब दूसरे वर्ष हज के लिए चले तो हज के पूर्व ही 'जुहफा' नामक स्थान पर पानी में डूब कर मर गए।

¼8½gt jr beke vyh fjtk v0½& आपका जन्म दिनांक 11 ज़ीकायदा सन् 153 हिजरी तदानुसार 770 ई0 को मदीना में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत इमाम मूसा0 काज़िम अ0 था। आप की इमामत 183 हिजरी से आरम्भ होती है मामून रशीद अब्बासी शासक ने राजनैतिक समस्याओं से विवश होकर आप को अपना युवराज बनाया था परन्तु समस्याओं के समाधान के पश्चात उसी शासक ने आपको 203 हिजरी तदानुसार 818 ई0 में विष देकर शहीद कर दिया। मामून कुल विद्वानों को एकत्र करके आपसे वाद विवाद करता था। आप प्रत्येक विद्वानों को ऐसा उत्तर देते थे कि सब चुप हो जाते थे।

ekSt tk ¼peRdkj½& मुहम्मद आत्मज काब जुहफा नामक स्थान पर जो सीरिया वालों का मीक़ात है सो रहा था कि रात्रि के समय स्वप्न में उसने मुहम्मद साहब को देखा। कुछ समय की वार्तालाप के पश्चात मुहम्मद साहब स. ने अपने सामने की परात में से जिसमें खजूर रखी थी एक मुट्ठी खजूर उसे दी। उसका कथन है कि जब मैंने उन खजूरों को गिना तो वे 18 थीं। जाग्रित होने पर उसने विचार किया कि मैं 18 वर्ष तक और जीवित रहूंगा। कुछ दिनों के पश्चात मदीनें में इमाम अली रिज़ा अ0 आए मैं उनके पास गया। वे भी उसी स्थान पर बैठे थे जहां मुहम्मद साहब बैठे थे। उनके सम्मुख एक परात में सीहानी खजूरें रखी थीं। उन्होंने एक मुट्ठी खजूर मुझे दी। जब मैंने गणना की तो 18 खजूरें थीं। मैंने और मांगा इस पर आपने उत्तर दिया कि यदि मेरे पूर्वज मुहम्मद साहब ने इस से अधिक दिया होता तो मैं भी और देता।

¼9½gt jr beke egEen rdh v0½& आपका जन्म दिनांक 10 रजब सन् 195 हिजरी तदानुसार सन् 811 ई0 को मदीने में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत इमाम अली रिज़ा अ0 था। आप की इमामत आपके पिता के शहीद होने पर 203 हिजरी से अनुमानतः (लगभग) 8 वर्ष की आयु में आरम्भ होती है। आपने अपने समय के सुप्रसिद्ध विद्वान यहिया आत्मज अक़्सम को वाद विवाद में परास्त किया था। आपको 25 वर्ष ही की आयु में मोतसिम अब्बासी शासक ने सन् 220 हिजरी तदानुसार 835 ई0 में विष देकर शहीद कर दिया।

ekSt tk ¼peRdkj½& सीरिया का एक व्यक्ति उस स्थान पर ईश्वरोपासना किया करता था जहां पर हज़रत इमाम हुसैन अ0 का पवित्र सिर (कटा हुआ) रखा गया था। वह एक रात्रि उपासना में लीन था कि उसने देखा कि सामने एक पुरूष खड़ा है। उसने कहा कि उठ खड़ा हो और मेरे साथ चल। वह अभी थोड़ी ही दूर गया था कि स्वयम् को कूफ़ा की मस्जिद में पाया फिर वहीं दोनों व्यक्तियों ने नमाज़ पढ़ी। उसके पश्चात थोड़ी दूर चल कर मदीना में मस्जिद–ए–रसूल में पंहुच गया। वहां उन दोनों ने काबे का तवाफ़ (चहु ओर घूमना परिक्रमा) किया। फिर थोड़ा दूर चलने पर सीरिया पंहुच गया। फिर वह व्यक्ति अदृश्य हो गया। अगामी वर्ष फिर वही पुरूष आया और फिर समस्त उक्त स्थानों को गया। अन्त में जब उसने आप का शुभ नाम पूछा तो आपने कहा कि मेरा नाम मुहम्मद तक़ी है।

¼10½gt jr beke vyh udh v0½& आप का जन्म 2 रजब सन् 212 हिजरी तदानुसार 829 ई0 को हवाली मदीना में हुआ था आपके पिता का नाम हज़रत इमाम मुहम्मद तक़ी अ0 था। आपकी इमामत

भी अनुमानतः (लगभग) 8 वर्ष की आयु से आरम्भ होती है। आपको मुतवक्कल अब्बासी शासक ने कारागार में बन्द कर दिया था। आपको सन् 254 हिजरी तदानुसार 868 ई0 में मोतमद अब्बासी शासक ने विष देकर 41 वर्ष की आयु में शहीद कर दिया।

ekSt tk ¼peRdkj½& एक बार मुतवक्कल अब्बासी शासक ने आप को दरिन्दों (फाड़ खाने वाले पशु) के सामने भेज दिया और स्वयं कोठे पर चढ़ कर देखने लगा। सभी पशु आप के चरणों का चुम्बन लेने लगे और दुम हिलाकर चारों ओर घूमने लगे।

¼11½gt jr beke gl u vl djh v0%& आप का जन्म सन् 232 हिजरी तदानुसार 846 ई0 को मदीना में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत इमाम अली नक़ी अ0 था। आप की इमामत सन् 254 हिजरी से आरम्भ होती है आप को मोतमद अब्बासी शासक ने बन्दी बना लिया था आपने अपने समय के नसरानी (ईसाई) विद्वान को पराजित किया था। आप के केवल एक ही पुत्र ''इमामे ज़माना'' हैं आपको मोतमद अब्बासी शासक ने सन् 260 हिजरी तदानुसार 874 ई0 में विष देकर शहीद किया।

ekSt tk ¼peRdkj½& एक बार मुहम्मद आत्मज अयाशक इत्यादि परस्पर आप के मोजिज़े का वर्णन कर रहे थे। वहीं एक नासिबी (बैरी) भी था उसने कहा मैं कुछ प्रश्न बिना कलम तथा सियाही के कागज़ पर लिखता हूं। उन्होंने मेरे सभी प्रश्नों का उत्तर दिया तो मैं समझूंगा कि वे सच्चे इमाम हैं। अयाशक कहते हैं कि हमने कुछ प्रश्न लिखे उस नासेबी ने भी बिना सियाही के एक काग़ज़ पर कुछ प्रश्न लिखे फिर सभी प्रश्न हज़रत की सेवा में भेज दिये गये। वहां से हमारे प्रश्नों के उत्तर आये और उसके काग़ज़ पर भी उत्तर लिखे हुए थे। पते के लिए उसका तथा उसके माता पिता का नाम भी आपने लिख दिया था। देखते ही वह चकित होकर मूर्छित हो गया। जब ठीक हुआ तो आप को सच्चा इमाम स्वीकार करके शिया हो गया।

¼12½gt jr beke egnh vkf[k: Tt ekuk v0%& आपका जन्म 255 अथवा 256 हिजरी तदानुसार 869 ई0 सामिरा में हुआ था। आपके पिता का नाम हज़रत इमाम हसन असकरी अ0 था। आप अपने पिता के इकलौते पुत्र थे। आपकी इमामत आपके पिता के शहीद होने के पश्चात 260 हिजरी तदानुसार 874 ई0 से आरम्भ होकर अब तक शेष है। आप वर्तमान काल के इमाम हैं। आप शत्रुओं के भय से ईश्वर की इच्छानुसार जन्म से ही लोगों की दृष्टि में नहीं हैं। आप का दर्शन केवल आप के विशेष मित्रों तथा अनुयायियों ने किया है।

l ang dk mRrj%& साधारण जनता आपके अदृष्य होने तथा आप की दीर्घायु होने पर आश्चर्य चकित है, इस भ्रम का उत्तर यह हैः–(1) जिस प्रकार हज़रत इब्राहीम अ0 तथा हज़रत मूसा अ0 नमरूद तथा फ़िरऔन के भय से अधिक समय तक अदृश्य रहे उसी प्रकार आप भी शत्रुओं के भय से अदृश्य हैं (2) आपके दीर्घायु होने पर भी अचरज नही करना चाहिए जब नबियों में आकाश पर हज़रत ईसा अ0 तथा हज़रत इद्रीस अ0 और पृथ्वी पर हज़रत खिज्र व इल्यास अ0 जीवित हैं। और पापियों तथा दुष्टों में, दज्जाल एंव इबलीस (शैतान) अब तक उपस्थित हैं और हज़रत नूह अ0 की आयु 2500 वर्ष मानते हैं तो पैग़म्बर अ0 के गौत्र के एक बालक के दीर्घायु पर आश्चर्य करना व्यर्थ है। आपकी ओझलता 2 प्रकार की है (1) लघु ओझलता (2) दीर्घ ओझलता।

¼1½y ?kqv kSy r k%& सन् 255 हिजरी से लेकर सन् 329 हिजरी तक रही। इस समय में आप के अनेकों सहयोगी और नायब कार्य करते थे जिनको लोग पत्र देते थे उसका उत्तर हज़रत के कर कमलों से लिख कर आता था। इन सहायकों से मोजिज़े (चमत्कार) प्रकट होते थे जिस के कारण लोगों को यह विश्वास था कि ये लोग हज़रत की ओर से ही नियुक्त किए गए हैं। इस लघु ओझलता के समय आपके सहयोगियों के अतिरिक्त और भी अन्य व्यक्ति हज़रत की सेवा में उपस्थित होते थे। आपके चार प्रसिद्ध सहयोगी थे जिनका विवरण इस प्रकार है।

pkj l g; kxh ¼uk; c½& (1) उस्मान आत्मज सईद असदी (2) अबू जाफ़र मोहम्मद आत्मज उस्मान। (3) अबुल क़ासिम हुसैन आत्मज रौह नौबख़्ती (4) शेख़ जलील अली आत्मज मुहम्मद समरी।

¼2½nh?kZ vkSy r k%& सन् 329 हिजरी से आरम्भ प्रकट होने तक अर्थात अनिश्चित काल तक रहेगी नियाबत व सिफ़ारत सब बन्द कर दी गई है अर्थात अब आप की ओर से सहयोगी तथा दूत के रूप में

कोई कार्य नहीं करता। इस समय में भी कुछ लोगों ने इमाम को देखा परन्तु उस समय न पहचान सके अथवा इस बात की घोषणा करने की आज्ञा न थी या वर्णन करने वालों ने केवल इष्ट मित्रों से ही वर्णन किया था।

vki dsizdV gksus dsfpUg

(1) जब पुरूष स्त्रियों की भांति हो जाएंगे और स्त्रियां पुरूष बनने की चेष्टा करेंगी। (2) पुरूष पर पुरूष तथा स्त्रियों पर स्त्रियां संतोष करेंगी। (3) स्त्रियाँ घोड़े की सवारी करेंगी। (4) असत्य गवाही स्वीकार की जाएगी और सच्ची गवाही रद कर (ठुकरा) दी जाएगी। (5) लोग रक्तपात करना, बलात्कार करना तथा ब्याज खाने को हलका तथा उचित कार्य समझेंगे। (6) संसार अत्याचार से परिपूर्ण हो जाएगा। (7) दज्जाल प्रकट होगा। (8) पृथ्वी के कीट अर्थात् सर्प एंव बिच्छू इत्यादि का प्रकट होना। (9) रबी–उल–आखिर एंव रजब के मास में 10 दिन तक निरन्तर वर्षा का होना। (10) सुफ़ियानी का निकलना। (11) आकाश से एक विचित्र ध्वनि का होना। (12) हज़रत ईसा अ0 का आकाश से धरती पर उतरना। (13) देलम तथा क़ज़वैन की ओर से सय्यद हसनी का निकलना। (14) रमज़ान मास की 14–15 तिथि को सूर्य ग्रहण तथा अंतिम तिथि को चन्द्र ग्रहण लगेगा। (15) दुम दार सितारों (पुच्छलतारों) का निकलना। (16) आपके प्रकट के पूर्व अधिक सूखे का पड़ना, भूकम्प आना वृहद प्लग एंव क्षय रोगों का फैलना इत्यादि।

eksft t k ½peRdkj ½%& आपके पिता के शहीद होने के पश्चात कुम (ईरान देश का एक नगर) के निवासी आए और हज़रत इमाम हसन असकरी अ0 को पूछा। लोगों ने कहा कि उनका देहान्त हो गया है। पूछा इमाम कौन हैं इस पर लोगों ने जाफ़र (आपके काका) की ओर संकेत किया। उन लोगों ने जाफ़र के समीप जाकर शोक प्रकट किया और कहा कि हमारे पास कुछ पत्र और धन हैं। बताओ पत्र किसके हैं और धन कितना है ताकि हम तुमको दे दें। यह सुनकर जाफ़र ने कहा कि लोग भविष्य की बात पूछते हैं। उसी समय 'अक़ीदा' नामक सेवक इमाम–ए–ज़माना की ओर से आया और कहा कि इनके इनके पत्र हैं और एक थैली में एक हज़ार अशरफियां हैं जिस में 10 अशरफ़ियां खोटी हैं। यह सुनकर वे पत्र और वह धन उस सेवक को दे दिया और कहा कि जिस श्रेष्ठ व्यक्ति ने आप को पत्र तथा धन लेने के लिए भेजा है वही इमाम–ए–ज़माना हैं।

jtvr%& अर्थात प्रलया के पूर्व इमाम–ए–ज़माना के समय में अधिक कुकर्मियों तथा सुकर्मियों का एक–एक झुण्ड संसार में आएगा। सुकर्मियों का झुण्ड संसार मे इस कारण आएगा की अपने इमामों का धन एंव राज देखकर ये लोग प्रफुल्लित हों और इनकी भलाइयों का कुछ बदला उनको इसी संसार में प्राप्त हो। और कुकर्मियों का पुनः आगमन सांसारिक कष्ट एंव दण्ड के हेतु है और इस कारण कि रसूल अ0 के परिवार वालों को धन की प्राप्ति न देख सकते थे उससे कई गुना देखेंगे और धर्मी शिया गण उनसे बदला लेंगे। शेष समस्त व्यक्ति अपनी क़ब्रों मे रहेंगे।

dk;e v0 dslkFkh

नजफ़ अशरफ़ (इराक़) से 27 व्यक्ति बाहर आएंगे। 15 व्यक्ति हज़रत मूसा अ0 की जाति से होंगे। 7 व्यक्ति 'असहाब–ए–कहफ' से और यूशा आत्मज नून अ0, सलमान–ए–फारसी, अबूज़र, मेक़दाद, मालिक–ए–अश्तर और उनके मित्र। उनकी ओर से शासक नियुक्त किए जाएंगे और 313 मोमिनगण होंगे जो चमत्कार द्वारा क़ायम अ0 के समीप आयेंगे।

jtvr dheq[; ?kVuk,a

(1) दज्जाल लईन (दृष्ट) का वध करेंगे (2) हज़रत ईसा अ0 भूमि पर पधारेंगे और हज़रत महदी अ0 के पीछे नमाज़ पढ़ेंगे (3) समस्त संसार से अत्याचार को दूर करके न्याय से भर देंगे (4)संसार के कुल धर्मों का भेद भाव मिटा देंगे केवल लोग इस्लाम धर्म को स्वीकार करेंगे (5) असत्य का सर्वनाश होगा और सत्य का बोल बाला रहेगा (6) कूफ़ा नगर (इराक़) का विस्तार 8 फ़रसख़ अर्थात 86.3 (लगभग) किलोमीटर होगा। कूफ़ा के महल कर्बला (इराक़) से मिल जाएंगे (6) मस्जिद–ए–कूफ़ा से घी तथा दूध का स्रोत प्रवाहित होगा (8) उन पशुओं का वध कर डाला जाएगा जिनका मास मुसलमान नही खाते अर्थात जो हराम है। (9) 'जज़िया नामक कर (दण्ड रूपी कर) को हटा देंगे।' (10) ईश्वर अत्यधिक बर्कत (प्रत्येक वस्तु में वृद्धि) आकाश से उतारेगा कि मेवों के वृक्षों की

½ks" ua0 16 ij-----------------½

ख़बर नामा

जिहाद के इस्लामी नज़रिये को ग़लत तरीक़े से पेश किया गया: कल्बे जवाद

जौनपुर में फ़िरक़ा वाराना फ़साद के ख़तरों और बढ़ते हुए मज़हबी जुनून के पेशे नज़र अन्जुमने इस्लामिया के ज़ेरे एहतेमाम एक जलसे का इनइक़ाद किया गया। इस जलसे में मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के उलमा ने खुसूसी तौर पर शिर्कत की। जलसे को ख़िताब करते हुए मजलिसे उलमाए हिन्द के जनरल सिक्रेटरी क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद नक़वी ने कहा कि ''जिहाद के नज़रिये को मुसलमानों और खुसूसन मीडिया ने ग़लत ढ़ंग से पेश किया है, जब कि जिहाद का अस्ल मतलब होता है किसी भी काम के लिए जिद्दो जोहद करना। अब अगर ये जद्दो जहद इस्लामी आईन के दाएरे में है तो तारीफ़ के क़ाबिल है और अगर इस्लामी उसूलों के ख़िलाफ है जैसा कि आलमी पैमाने पर दहशतगर्द कर रहे हैं वो खुदा के नज़दीक मातूब और मुस्तहक़ सज़ा है। मौलाना ने कहा कि जिहाद को हमने सिर्फ क़त्ल व ग़ारत समझ लिया है जबकि शरीअत में जिहालत के ख़िलाफ़ इक़्दाम करना भी जिहाद है और इन्सान का रिज़्क़े हलाल की जुस्तजु में मेहनत व मज़दूरी करना भी उसी ज़ुमरे में आता है बल्कि अंतिम वर्णित कोशिश को कुर्आन ने इबादत कहा है। अम्न दुश्मन ताक़तें इस वक़्त पूरी कोशिश में हैं कि दुनिया का निज़ाम शिद्दत पसन्दों के ज़रिये ख़राब किया जा सके, उन्होंने कहा कि इस वक़्त आलमी पैमाने आतंकवादी हमले हो रहे हैं और उन वाक़ेआत में हर मज़हब के लोग मारे जा रहे हैं जो इस बात का वाज़ेह सुबूत है कि आतंकवादी बेरहेम और बे-दीन हैं जिनमें इन्सानियत नाम की कोई चीज़ नहीं है, जबकि कुर्आन ने एक इन्सान के क़त्ल को पूरी इन्सानियत के क़त्ल से ताबीर किया है''।

ज़िला गया तेरेगी के महन्त देवबन्धु पदमाकर मिश्रा ने कहा कि ''पैग़म्बर मुहम्मद स. ने अपनी तमाम ज़िन्दगी अम्न व शान्ति और भाई चारगी की तालीम दी है उनकी शिक्षा में कहीं भी हमें तअस्सुब और तंग नज़री का वजूद नहीं मिलता। तो फिर जो आदमी दहशत, तअस्सुब और फ़िर्का वारयत की बात करे हमें समझ लेना चाहिए कि उसका इस्लाम से कोई तअल्लुक़ नहीं है बल्कि वो इस्लामी चोले में कोई शर पसन्द है''।

गुरू सिंह महा सभा के सिक्रेटरी सरदार तिरलोचन सिंह ने कहा कि मौजूदा अहद में आलमी मन्ज़र नामे को देखते हुए ज़रूरत इस बात की है कि हम अपनी अना को पसे पुश्त डाल कर एक जुट हो ंऔर तमाम मज़ाहिब के लोग आतंकवाद के ख़िलाफ़ अमली इक़्दामात करें।

मसीही ऐसोसिएशन की तरफ़ से मौलाना कल्बे जवाद नक़वी को अवार्ड

4 अप्रैल 2013 उत्तर प्रदेश मसीही ऐसोसिएशन के ज़ेरे एहतेमाम क्राइस्ट चर्च मैदान लखनऊ में मुनअक़िद ईस्टर सम्मेलन में मौलाना कल्बे जवाद को उनकी कार्यवाही को देखते हुए मसीही एसोसिएशन के सदस्यों ने गुलदस्ते से पुरस्कृत किया। इस उस ख़ास समय पर हज़ारों लोगों को ख़िताब करते हुए राकेश चितरी (मसीही एसोसिएशन) ने कहा कि ''ऐसा पहली बार हुआ है कि जब किसी मज़हबी रहनुमा ने इतने बड़े पैमाने पर दहशत गर्दी के ख़िलाफ बिला तफ़रीक़ मज़हब व मिल्लत लांग मार्च निकाला। इस समय पूरी दुनिया दहशतगर्दी के अज़ाब में जकड़ी है, आलमी सतह पर ज़रूरत उस बात की है कि आतंकवाद के ख़िलाफ़ तमाम मज़ाहिब एक मन्च पर आएं ताकि दुनिया को मालूम हो कि दहशतगर्द अधर्मी हैं। 31 मार्च को आलमी दहशतगर्दी के ख़िलाफ़ जो एहतेजाज हुआ उसमें किसी एक धर्म के मसाएल को पेश नज़र नहीं रखा गया बल्कि हिन्दु मुस्लिम सिख और हमारे यानी ईसाइयों के मसाएल पर भी मौलाना ने ग़ौर किया और दहशतगर्दी के ख़िलाफ़ हर क़ौम व मिल्लत के हर आदमी से मुत्तहिद होकर आवाज़े एहतेजाज बलन्द करने की गुज़ारिश की। इसलिए यहां मौजूद हर आदमी के एहसासात व जज़्बात की तर्जुमानी करते हुए मैं ये कह सकता हूं कि हमारा पूरा मसीही समाज दहशतगर्दी के ख़िलाफ़ मौलाना के साथ है''। प्रोग्राम की इब्तेदा में मसीही तनज़ीम की जानिब से मौलाना को पुरस्कृत करते हुए गुलदस्ते से नवाज़ा गया।

लखनऊ में मौलाना कल्बे जवाद की क़यादत में दहशतगर्दी के ख़िलाफ़ पुर अम्न ऐतेजाज

31 मार्च 2013 को आलमी पैमाने पर फ़ैली दहशतगर्दी के ख़िलाफ़ हिन्दु, मुस्लिम सिख और ईसाई मज़हब के रहनुमा एक साथ एहतेजाजी अम्न मार्च में शामिल हुए। इस तारीख़ी मौक़े पर सभी ने अमरीका, इस्राईल और सऊदी अरब के द्वारा फैलाई जा रही दहशतगर्दी के ख़िलाफ़ अपनी हिमायत का ऐलान किया। इस अवसर पर सभी ने कहा कि दहशत गर्दी का कोई मज़हब नहीं है, उसको किसी भी मज़हब से जोड़ना ग़लत है।

मक़बरा सआदत अली ख़ां से मौलाना कल्बे जवाद, मौलाना अबुल इरफ़ान फिरिंगी महली, मुहम्मदी मिशन के सद्र मुहम्मद अय्यूब अशरफ़, अयोध्या के महन्त देवयागिरि, सरदार डा० गिरमीत सिंह, सरदार जगजीत सिंह और मसीही एसोसिएशन के राकेश चितरी की क़यादत में हज़ारों की तादाद में लोगों ने एक अम्न मार्च गांधी मुजस्समा जी पी ओ पार्क तक निकाला। इस मार्च में दहशत गर्दी के ख़िलाफ़ नारे लगाते हुए लोग चल रहे थे। उससे क़ब्ल एक एहतेजाजी जलसा मक़बरा नवाब सआदत अली खां में हुआ जिसमें मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के रहनुमाओं ने दहशतगर्दी की मज़म्मत करते हुए मुत्तहिद होने पर पूरा ज़ोर दिया। महन्त देवयागिरि ने कहा कि सभी मज़हब रहमत का दर्स देते हैं। और उसी से सबक़ हासिल करके आज हम दहशत गर्दी के ख़िलाफ़ मुत्तहिद रहना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि अवाम वोटों की सियासत को समझे तभी वो दहशतगर्दी के ख़िलाफ कोई क़दम उठा सकती है। उन्होंने कहा कि आज नहीं तो कल दहशत गर्दी को ख़त्म होना होगा।

अपने इस्तेक़बालिया ख़िताब में मौलाना कल्बे जवाद ने रसूल स. की एक हदीस बयान की जिसमें उन्होंने इर्शाद फ़रमाया है कि मज़लूम की बद्दुआ से डरो, मौलाना ने कहा कि मज़लूम सिर्फ मुसलमान ही नहीं बल्कि किसी भी क़ौम का हो सकता है। इस्लाम ही नहीं बल्कि किसी भी मज़हब में ज़ुल्म की इजाज़त नहीं है। उन्होंने कहा कि ये तारीख़ी मौक़ा है जब ज़ुल्म के ख़िलाफ सभी मज़हब के रहनुमा एक साथ खड़े हैं। मौलाना ने कहा कि आज का ये तारीख़ी मौक़ा ये भी साबित करता है कि दहशतगर्दी का तअल्लुक़ किसी मज़हब से नहीं, उन्होंने कहा हम हमेशा इस बात के ख़िलाफ़ नज़र अए हैं कि दहशतगर्दी को किसी मज़हब के नाम से जोड़ा जाए। उन्होंने कहा कि मज़हबी तालीमात पर चलकर मुल्क और इन्सानियत को बचाया जा सकता है। उन्होंने अमरीका को दहशतगर्दी का बाबा आदम बताया। और कहा कि अमरीका ने ही दहशतगर्दी को बढ़ावा दिया। उन्होने अपने बयान को जारी रखते हुए कहा कि दहशतगर्दी के लिए सऊदी अरब और क़तर से फण्डिंग की जा रही है। अरब देशों में अमरीका और इस्राईल के ख़िलाफ़ बोलने पर पाबन्दी है। अरब में 50,0000 अमरीकी फौजियों की मौजूदगी मक्का और मदीना के लिए ख़तरनाक है। क्योंकि ये फौजें 15 मिनट में सऊदी अरब पर क़ब्ज़ा कर सकती हैं। उन्होंने हिन्दुस्तानी हुकूमत से दहशतगर्दी से सख़्ती से निपटने की मांग की। और गुजरात फ़सादात के मुजरिम ख़ासकर नरेन्द्र मोदी को भी फ़ांसी दिये जाने की मांग की।

उन्होंने लखनऊ के वज़ीरगंज में दहशत गर्दाना कार्रवाई के मुजरिमों की रिहाई पर अफ़सोस का इज़हार करते हुए कहा कि इससे तो दहशतगर्दी और बढ़ेगी और रियासती हुकूमत को चाहिए कि वो वोटों की लालच में दहशतगर्दी को बढ़ावा न दे।

उन्होंने इराक़, म्यामांर, सऊदी अरब, पाकिस्तान आदि में जारी दहशतगर्दाना हमलों पर पाबन्दी लगाए जाने की मांग की।

(पेज नं० १४ का.........बक़िया) शाखाएं टूट जाएंगी। गर्मियों का मेवा जाड़े में तथा जाड़े का मेवा गर्मियों में उपलब्ध होगा। (11) ईश्वर शियों (अनुयायी) को ऐसी शक्ति प्रदान करेगा कि भूमि का कोई पदार्थ भी उनसे गुप्त न रह सकेगा। यदि कोई अपने घर का समाचार जानना चाहेगा तो उसे 'इलहाम' (ईश्वर की ओर से हृदय में एक पूर्ण विश्वास का बैठ जाना) होगा कि उसके घर वाले क्या करते हैं। (12) हज़रत महदी अ०, हज़रत आदम अ० व नूह अ० की छड़ी, हूद अ० व सालेह अ० की बपौती, इब्राहीम अ० व सालेह अ० व यूसुफ़ अ० का संग्रह, और पैमाना (तराज़ू) शुऐब अ० और मूसा अ० का ताबूत (बक्स) एंव डण्डा दाऊद अ० का कवच, सुलैमान अ० का मुकुट व अंगूठी और हज़रत ईसा अ० की सामग्री एवं समस्त वैभवशाली पैग़म्बरों की बपौती उपस्थिति करेंगे। (13) हज़रत मूसा अ. का डण्डा एक कठोर पत्थर पर गाड़ देंगे। वह उसी समय एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लेगा कि समस्त सेना उसके नीचे आ जाएगी। (14) कुल इमामों को साहेब-उल-अम्र अ० संसार में फेर लाएंगे और उनके सहायकों को भी ताकि वे प्रसन्न हों और उनके विपक्षियों को भी ताकि परलोक से पूर्व ही संसारिक कष्ट एंव दण्ड भोग लें। (15) शैतान, उसके अनुयायी एंव वंशजीय शैतान सब एकत्र होंगे। उनसे कूफ़ा के समीप हज़रत अली अ० से भयंकर और भीषण युद्ध होगा। वे समस्त शैतान हज़रत अली अ० तथा फ़िरिश्तों की सहायता से मारे जाएंगे। (16) मोमिनों तथा बैरियों के प्राण उनके शरीरों में पुनः प्रवेश करेंगे ताकि मोमिन (सच्चा मुसलमान) बैरियों से अपना बदला चुकायें। (17) कुल संसार की आयु 1 लाख वर्ष है। 30 हज़ार वर्तमान कालीन व्यक्तियों के धन तथा राज्य की है और 80 हज़ार वर्ष मोहम्मद साहब और उनके परिवार के धन का समय है। (18) हज़रत मुहम्मद साहब का वस्त्र शरीर में पीला अमामा (पगड़ी) सिर पर, पैरों में मुहम्मद साहब का जूता और हाथ में आप ही का डण्डा, तलवार और ध्वजा होगी।